संपादक के नाम पत्र

सुल्तान अहमद इस्माइल चेन्नई

मैं इस बात की सराहना करता हूं कि लेखक ने अपने आलेख का शीर्षक निष्पक्षता दिखाते हुए यह दिया है कि ''क्या जी.एम. पपीते से भारतीय किसानों को लाभ मिलेगा?'' मैं भी यही सवाल करता। पत्रिका में प्रकाशित लेख से सुनहरी तस्वीर नज़र आती है। यदि लेख में तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय द्वारा किए गए परीक्षणों के बारे में खुलासा किया जाता तो सराहनीय होता। मुझे आशंका है कि वे अपने परीक्षण सिर्फ विषाणु प्रतिरोधिता तक सीमित रख सकते हैं। यह प्रौद्योगिकी पत्तियों, डंठलों, तने और जड़े पर किस तरह से असर करती है? क्या इसमें मिट्टी की गुणवत्ता, सूक्ष्मजीवियों और अन्य जीवों की मौजूदगी और विविधता का अध्ययन किया जा सकता है? पपीते के बीजों की कई बार काली मिर्च के साथ मिलावट की जाती है। इस तरह अनायास इसके उपभोग का मानव पर किस तरह का असर होगा?

इस लेख में लिखा है कि ....''जेम्स के अनुसार परीक्षण से पता चला है कि यह प्रणाली कारगर है और किसी एलर्जी को पहचान कर उसे दूर किया जा सकता है। लेकिन किस स्तर पर? तब जबकि यह किसी मानव पर अपना असर दिखा चुकी हो? वह (श्रीमान जेम्स) इतने आशावादी कैसे हो सकते हैं... कि यह कहें, ''मोनसांटो वापस आकर यह नहीं कहने वाली कि 'अब दस साल हो चुके हैं और आपको अब रॉयल्टी देनी होगी।'' यदि वे वाकई में रॉयल्टी मांगें और भारत 2020 में पपीते का अग्रणी उत्पादक बन जाए तो क्या होगा?

इतने खुले सवालों के साथ मैं महसूस करता हूं कि तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय ने खुद को प्रौद्योगिकी उधार लेने की ओर झुकने दिया है, ऐसी प्रौद्योगिकी जो सदाबहार नहीं है। लेकिन मैं आपको संशयात्मक शीर्षक लगाने के लिए बधाई देता हूं।

भारत में पपीते की फसल नष्ट करने वाले विषाणु के खाते में जुटा तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय।

क्या हैं जी एम फसलें

क्या भारतीय किसानों को रास आएगा जी एम पपीता?

नान्जिंग को ताइवान

यह जानकर अच्छा लगा कि आप लोग पपीते को विषाणुओं के संक्रमण से बचाने के लिए जी.एम. प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कर रहे हैं। लेकिन... पपीते की फसल को सिर्फ रिंगस्पॉट विषाणु का ही सामना नहीं करना पड़ता। मैं ज़ोरदार तरीके से इस बात के पक्ष में हूं कि पादप स्वास्थ्य प्रबंधन और जी.एम. तकनीक के मेल से मौजूदा समस्याओं को हल किया जाए। इससे पर्यावरण में जाने वाला जहर और विश्वव्यापी गर्मी में योगदान भी कम होगा। क्या समन्वित रणनीति ज़्यादा बेहतर नहीं है बजाय इसके कि हम एक ही उपाय को अपनाएं? मुझे आशा है कि भारत में पपीते के उत्पादन में इससे मदद मिलेगी।

रमेश चंद्र दिल्ली

अमेरिका और भारत के अंतरिक्ष संबंधों के कारण भारत के लोगों में अमेरिका की छवि लोकप्रिय बनी है। सुनीता विलियम्स और कल्पना चावला जैसी बेटियों को अंतरिक्ष यात्री के रूप में इतिहास रचने में अमेरिका का योगदान सराहनीय और यादगार छवि के रूप में हमेशा भारतीय जनता के मन में रहेगा। इन दोनों के अंतरिक्ष में स्थापित कीर्तिमान के कारण ही भारत में अंतरिक्ष के प्रति लोकप्रियता बढ़ी है और यह अमेरिकी योगदान से ही संभव हुआ है।

घनश्याम सिंह यादव कन्नौज

इस अंक में ''मिलकर तलाश नए क्षितिजों की'' तथा चंद्रमा पर यान भेजने से संबंधित लेख अच्छे लगे। चंद्रमा से संबंधित अभियान में दोनों देशों की दिलचस्पी और लक्ष्य समान हैं। चंद्रयान में दोनों देशों के साथ काम करने से दोनों देशों में एक नया रिश्ता जुड़ेगा।

अनंत अभिमन्यु हजारीबाग

''चांद पर किसका हक'' लेख सर्वाधिक रोचक लगा। चांद हम पृथ्वीवासियों के लिए हमेशा ही एक रहस्य रहा है और इसके सिर्फ एक फ़ीसदी रहस्यों से ही हम रूबरू हो पाए हैं। उम्मीद है कि नए अभियान इसके बारे में और नई जानकारियों का खुलासा करेंगे।

मिलकर तलाश नए क्षितिजों की

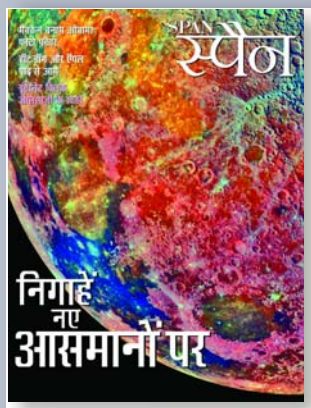

विकास श्रीवास्तव कानपुर

स्पैन का जुलाई-अगस्त अंक बेहद आकर्षक और ज्ञानवर्द्धक लगा। नासा की नई उड़ान, मिलकर तलाश नए क्षितिजों की, नासा के 50 साल जैसे अंतरिक्ष विज्ञान से संबंधित लेख बहुत ही जानकारीपूर्ण और विश्व के भविष्य को हमारे सामने प्रस्तुत करने वाले रहे।

महेश जैन बड़ौत

''मंगल पर जीवन की खोज'' और ''क्या चांद पर जीवित रहना संभव है?'' लेख सर्वाधिक पसंद आए। उड़नतश्तरियों से संबंधित जानकारी वाला लेख ''उड़न अजूबे'' भी अच्छा लगा। इसके अलावा ''अमेरिका के अनूठे दर्शनीय स्थल'' और ''प्रौद्योगिकी ने बदला चुनावों का अंदाज़'' भी पसंद आए।

विष्णु कुमार सक्सेना उज्जैन

जुलाई-अगस्त अंक में अमेरिकी चुनावों पर बहुत ही अच्छे तरीके से विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। ''अमेरिका के कानून निर्माताओं का चुनाव'' लेख पसंद आया। अन्य लेखों में अंतरिक्ष तकनीक पर दी गई सामग्री भी रोचक लगी।